ISSN No. 2394-9996

अनुवाद का सैद्धान्तिक पक्ष

प्रा. राजपूत पी.डी.
(हिंदी विभाग)
श्री माधवराव पाटील महाविद्यालय, मुरूम
ता. उमरगा, जि. उस्मानाबाद.

21 वी शताब्दी में अनुवाद का असाधारण महत्व रहा है। आज अनुवाद ने साहित्य के क्षेत्र की सीमा को लांधकर सभी क्षेत्रों में अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। अनुवाद का मुख्य आशय विश्व की विभिन्न संस्कृति, भाषा को जोड़कर उससे परिचित कराना है। विश्व बन्धुत्व की कल्पना साकार करने के लिए भी अनुवाद अहम् भूमिका निभाता है। विश्व बन्धुत्व के इस नये दौर में किसी प्रदेश की जनता को समझने के लिए उस प्रदेश के साहित्य को समझना अत्यंत आवश्यक है। ``इसके अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न राष्ट्रों के बीच राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और प्रायोगिक तथा साहित्यिक और सांस्कृतिक स्तर पर बढ़ते हुए आदान-प्रदान के कारण अनुवाद कार्य की अनिवार्यता और महत्ता की नई चेतना प्रबल रूप से विकसीत हुई है। इन कारणों से यह कहना उचित ही प्रतीत होता है कि अनुवाद एक व्यापक तथा एक सीमा तक अनिवार्य और तर्कसंगत स्थिति है।``[1] अर्थात आज अनुवाद का क्षेत्र अत्यंत विस्तारित हो गया है।

अनुवाद सिद्धान्त के अन्तर्गत-अनुवाद प्रणाली अनुवाद प्रक्रिया, अनुवाद के प्रकार, आदि प्रमुख बातें आ जाति है। अनेकों का यह प्रश्न रहा है कि अनुवाद सिद्धान्त का अनुवाद के लिए क्या उपयेाग है? बात स्पष्ट है सफल अनुवादक या समीक्षक के लिए अनुवाद सिद्धान्त के विभिन्न पक्षों पर अधिकार के साथ चर्चा नहीं कर पाते। ``विशेष रूप से ऐसे लोगों के लिए तथा सामान्य रूप से रूचिशील अनुवादकों के लिए अनुवाद कार्य में दक्षता विकसित करने में अनुवाद सिद्धान्त के योगदान को निरूपित किया जा सकता है इस योगदान का सैद्धान्तिक औचित्य इस दृष्टि से भी है कि अनुवाद कार्य सर्जनात्मक होने कि कारण ही गौण रूप से समीक्षात्मक भी होता है। इसे सर्जनात्मक समीक्षक भी कह सकते हैं। सर्जनात्मक को विशुद्ध तथा पुष्ट करने के लिए जो समीक्षात्मक स्फरणाएँ अनुवादक में होती हैं वे अनुवाद सिद्धान्त के ज्ञान से प्रेरित होती है।``[2] अंगेजी के ट्रांसलेशन थिअरी का

हिन्दी रूपांतरण अनुवाद सिद्धान्त है। स्थूल रूप से अनुवाद सिद्धान्त के दो उल्लेखनीय पक्ष हैं- समन्वय ओर संतुलन। यह बात विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है कि शास्त्रों की प्रासंगिक मान्यताओं से अनुवाद सिद्धान्त का स्वरूप निर्मित है वहाँ स्वयं अनुवाद सिद्धान्त उन शास्त्रों की प्रासंगिक मान्यताओं से अनुवाद सिद्धान्त का स्वरूप निर्मित है वहाँ स्वयं अनुवाद सिद्धान्त उन शास्त्रों का एक विशिष्ट अंग है। अनुवाद के सैद्धान्तिक पक्ष के द्वारा उसके विविध आयामों क्षत्रों स्वरूप पर विस्तृत प्रकाश डाला जा सकता है। युग के अनुसार सिद्धान्तों में कुछ हदतक परिवर्तन होता रहा है। अब अनुवाद के सैद्धान्तिक पक्ष के विभिन्न बिंदुओं का विवेचन किया जायेगा।

अनुवाद की प्रक्रिया :- सैद्धानितक दृष्टि से अनुवाद की प्रक्रिया का आशय अनुवाद कैसे होता है का विवेचन है। जिसमें अनुवाद कार्य सम्बन्धी बहिर्लक्षी परिस्थितियों और भाषा संरचना तथा भाषा प्रयोग सम्बन्धी अंतर्लक्षी स्थितियों का संतुलन है। इसमें अनुवाद की ईकाई, अनुवाद का पाठक और कला, कौशल। तथा अनुवादके प्रक्रियागत स्वरूप को सुव्यवसिथत रूप में समझने के लिए पाँच सोपान अधिक समुचित है। 1. मूलपाठ - बोधन 2. विश्लेषण 3. भाषांतरण 3. पुनरीक्षण 5. समायोजन, अनुवाद की प्रक्रिया के सम्बन्ध में नाइडा, न्यूयार्क, बाथगेट तथा डॉ. भोलानाथ तिवारी आदि विदवानों ने अपने-अपने मत प्रस्तुत किए है।

नाइडा के अनुसार अनुवाद की प्रक्रिया के दो रूप है- प्रत्यक्ष और परोक्ष। वे परेाक्ष प्रक्रिया के समर्थक है। अपनी पुस्तक Toword a Science of Translating में अधिक विस्तृतरूप से विश्लेषण किया है। उनका कहना है अनुवाद एक क्रमबद्ध प्रक्रिया है, जिसमें मूलपाठ की प्रत्येक इकाई का अनुवाद होता है. उन्होंने प्रत्यक्ष रूप के अंतर्गत तीन स्थितियाँ स्वीकार की है तो परोक्ष रूप के अंतर्गत पॉच स्थितियाँ निर्धारित की है। मूलभाषा पाठ, विश्लेषण, संक्रमण, पुनर्गठन और लक्ष्यभाषा पाठ प्रमुख रहे है।

अनुवाद के प्रकार :- अनुवाद के प्रकारों के सम्बन्ध में विभन्न विदवानों ने अनुवाद के प्रकारों के आधार को दृष्टि मे रखकर कई भेद प्रस्तुत किए हैं - और कोई प्रविधि के आधार पर - अनुवाद के सात प्रकार किए हैं। 1. पूर्ण 2. आंशिक 3. समस्त 4. सीमित 5. शाब्दिक 6. शब्दशः 7. मुक्त कसाग्रॉदे इस विद्वान ने अनुवाद के चार प्रकार बताया है।

अनुवाद की प्रकृति :- 1. शब्दानुवाद 2. भावानुवाद 3. छायानुवाद 4. व्याख्यानुवाद 5. सारानुवाद 6. वार्तानुवाद 7. रूपांतरण 8. आदर्श अनुवाद.

अनुवाद की प्रणाली :- अनुवाद सिध्दान्त का अन्य आयाम अनुवाद प्रणाली है। जिसके द्वारा पाठ प्रकारों की विविधता की यथासम्भव दीर्घतम श्रंखला के अनुवाद के लिए सैद्धान्तिक स्तर पर किसी परिणाम पर पहूँचा जा सके। इसे समझने के लिए अनुवाद प्रक्रिया तथा अनुवाद के प्रकार से परिचित होना आवश्यक है।

अनुवाद प्रणाली के नियामक तत्व है -1. मूलपाठ की प्रकृति 2. अनुवादक 3. अनुवाद का उद्देश्य 4. पाठक 5. भाषाप्रयोग का व्यावहारिक संदर्भ। इसमें अनुवादक द्वारा स्वेच्छा से निर्धारित अनुवाद का उद्देश्य नियामक तत्व बनता है। इसका महत्व परीक्षणात्मक भी होता है और शिक्षणात्मक भी। अनुवाद कार्य का विशेष महत्व है। जिससे सफल अनुवाद एवं अनुवाद की विशेषताएँ स्पष्ट हो जाती है। यह सामान्य बात है अनुवाद में मूल पाठ की क्षति होती है - गठन पक्ष में संदेश पक्ष में भी इसलिए क्षति की पूर्ति के प्रयास भी होते है, और ऐसा होना अनुवाद कार्य की प्रकृति का अंतरंग है।

निष्कर्ष :- अनुवाद की सैद्धांतिक बातों को ध्यान में रखकर यह कहा जा सकता है कि अनुवाद शिक्षण की आवश्यकता है। भारत के अधिकांश विश्वविद्यालयों में अनुवाद विज्ञान की स्वतंत्र शाखा चलाई जा रही है। इस शिक्षण में प्रथम अनुवाद के सैद्धान्तिक पक्ष का ही अध्ययन अनिवार्य हो जाता है। जो कि छात्रों को अनुवाद की एक सही दिशा प्राप्त हो। आगे चलकर एक सफल अनुवादक बनकर रोजगारोन्मुख बनें। तथा अनुवाद की संरचना से परिचित हो।

संदर्भ सूची:-

1. अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा - डॉ. सुरेश कुमार पृ.21.
2. अनुवाद सिध्दान्त की रूपरेखा - डॉ. सुरेश कुमार पृ. 37.
3. हिंदी अनुवाद एवं भाषिक संरचना - डॉ. सो. शकुंतला पांचाल पृ. 45.